सितंबर १९८९ हिंदी पत्रिका में प्रकाशित

मगध का भाग्य जागा

२६०० वर्ष पूर्व के उत्तर भारत में १६ प्रमुख जनपद थे –

(१) अंग (२) मगध (३) काशी (४) कोशल (५) व्रिजी (वज्जि) (६) मल्ल (७) चेतीय (८) वंस (वंग) (९) कुरु (१०) पंचाल (११) मत्स्य (१२) सूरशेन (१३) अश्वक (१४) अवन्ती (१५) गंधार और (१६) कंबोज।

इनमें से कुछ एक में गणतंत्र शासन था, बाकी में राजतत्र।

इनमें से मगध बहुत विशाल और शक्तिशाली जनपद था। वहां के राजवंशीस शासन का शासक था महाराज भाति। उसे अपनी महारानी बिम्बि से एक पुत्र रत्न प्राप्त हुआ। बिम्बि का पुत्र होने के कारण वह बिम्बिसार के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

बिम्बिसार बड़ा महत्त्वाकांक्षी था। किशोर अवस्था में ही उसके मन में राज्याभिषेक की प्रबल कामना जागी। राजा भाति को अपने पुत्र के प्रति बहुत अनुराग था। उसने पन्द्रह वर्ष के किशोर बिम्बिसार का राज्याभिषेक कर दिया। स्वयं निवृत्त हो गया। बिम्बिसार की महत्वाकांक्षा बढ़ती गयी। युवावस्था तक पहुँचते पहुँचते वह शस्त्रविद्या में निष्णात हो गया और साथ सैन्य-संचालन के रणकौशल्य में भी। उसने अपनी सेना को विविध शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित किया। इस विपुल सैन्यबल और अपने युद्ध-चातुर्य से उसने पड़ोस के अंग जनपद को अपने आधीन कर लिया। अंग और मगध के संयुक्त हो जाने पर बिम्बिसार की शक्ति बढ़ी। सेना बढ़ी। इस विशाल सेना का नायक होने के कारण वह सेनिय याने सेनानी बिम्बिसार कहलाने लगा। उसकी सेना का झंडा श्वेत था। उस श्वेतके तुसेना का दबदबा बढ़ा और आसपास के जनपदों पर उसकी धाक जमने लगी।

मगध के पश्चिमोत्तर में कोशल भी एक बहुत विशाल और शक्तिशाली जनपद था। उसका शासक था महाराजा महाकोशल, जिसका पुत्र था प्रसेनजित कोशल और पुत्री थी कोशलदेवी। राजकुमार प्रसेनजित का विवाह मगध के राजा भाति की पुत्री याने बिम्बिसार की भगिनी से हुआ। भाति के उत्तराधिकारी सेनिय बिम्बिसार की बढ़ती हुई शक्ति से कोशल नरेश प्रभावित हुआ। उसने राजकुमारी कोशलदेवी का विवाह युवा मगध नरेश से कर लिया और इस प्रकार उसने अपने संबंध और सुदृढ़ कर लिए। महाराज कोशल ने अपनी पुत्री को काशी का राज्य दहेज में दे दिया। इससे बिम्बिसार की साम्राज्य शक्ति और बढ़ी। अब वह अंग, मगध और काशी जैसे तीन महाजनपदों का सम्राट हो गया। उसके राज्यसंपद, ऐश्वर्य और सैन्य-शौर्य छलांगें लगाकर बढ़ने लगे और इसके साथ साथ युवावस्था की कामभोग-लिप्सा भी बढ़ने लगी। अग्रराजमहिषि कोशलदेवी के अतिरिक्त आसपास के राज्यों की देवांगनाओं सदृश राजकुमारियों से और अन्यान्य रूपसियों से उसका रनिवास बढ़ता गया। फिर भी उसकी सौन्दर्य-लिप्सा कम नहीं हुई।

सुदूर मद्र (मद्द) देश की राजधानी सागल (आधुनिक पाकिस्तानी पंजाब में लाहौर के समीप स्यालकोट नगर) की राजकुमारी खेमा सुवर्ण वर्णा थी। सर्वांग सुन्दरी थी। उसकी अनिंद्य रूप-माधुरी की चर्चा सुनी तो बिम्बिसार ने उससे भी विवाह कर लिया और उसे अपने रनिवास में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया।

वह जिस किसी जनपद में किसी अपूर्व सुन्दरी की चर्चा सुनता तो उसे प्राप्त करने के लिए छटपटाने लगता। उन दिनों किन्हीं किन्हीं जनपदों में अपने प्रदेश की सर्वश्रेष्ठ सर्वांग सुन्दरी और नृत्य, गीत, वाद्य आदि ललित कलाओं की नितांत निपुणा युवती का चुनाव होता था। जनपद के अनेक राजकुमार, राजपुरुष और शक्तिशाली सामंत इत्यादि उस सौंदर्य-साम्राज्ञी से विवाह करने के लिए आतुर हो जाते थे। इस डर से कि कहीं कोई पारस्पारिक कलह न हो उठे, उस युवती को राजसी सम्मान के साथ नगर-शोभिनी मान लिया जाता था। जनपद कल्याणी के नाम से अलंकृत किया जाता था और उसे जनपद की प्रमुख गणिका का जीवन जीना पड़ता था। राज्य की ओर से उसके शरीर की कीमत बहुत ऊंची निर्धारित कर दी जाती थी।

ऐसी ही एक सौंदर्य-साम्राज्ञी नगरवधू आम्रपाली थी जो कि वज्जि(लच्छवी) गणराज्य की जनपद कल्याणी थी। उसकी चर्चा सुनी तो बिम्बिसार उसे प्राप्त करने के लिए विह्वल हो उठा। वज्जि राज्य से मगध के संबंध बहुत अच्छे नहीं थे। वैसे भी किसी जनपद कल्याणी से विवाह-संबंध नहीं किया जा सकता था। अतः अपनी कामपिपासा बुझाने के लिए वह अपने कुछ सैनिक साथियों के साथ बार बार भेष बदलकर वज्जि राजधानी वैशाली जाता रहता और आम्रपाली के शरीर-सौंदर्य का उपभोग करता रहता।

इसी प्रकार उज्जैन की जनपद कल्याणी, सौंदर्य सुषमा की सजीव प्रतिमा पद्मावती की ख्याति सुनकर वह वहां भी पहँचा।

हो सकता है इस प्रकार अन्य प्रादेशिक सौंदर्य साम्राज्ञियों के पीछे भी वह भौंरे की तरह मँडराता रहा हो। परंतु आम्रपाली और पद्मावती से उसका संबंध जगजाहिर हुआ। क्योंकि दोनों को ही उससे एक एक पुत्र की प्राप्ति हुई। बिम्बिसार के संयोग से आम्रपाली ने विमलकौंडन्य को और पद्मावती ने अभय को जन्म दिया।

धन-मद और राज-मद ने उसका काम-मद बहुत उभारा। परंतु फिर भी हमें बिम्बिसार में मानवी मूल्य भी दीख पड़ते हैं। इन भाड़े की गणिकाओं से उत्पन्न संतान को उसने सहर्ष स्वीकार किया। उनके प्रति अपने उत्तरदायित्व से विमुख नहीं हुआ। गर्भ अवस्था से ही उनके भरण पोषण के लिए अपनी ओर से पर्याप्त धन भेजता रहा और फिर उनके लालन पालन के लिए भी। पद्मावती ने सात वर्ष पश्चात पुत्र अभय को उसके पिता के पास भेज दिया तो बिम्बिसार ने उसके साथ रंचमात्र भी दुर्व्यवहार नहीं किया। अन्य राजकुमारों के मुकाबले उससे किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया। राजकुमार अभय को अन्या राजकुमारों की ही भांति राजमहल में पाला गया। बिम्बिसार के मन में राजकुमार अभय के प्रति वैसा ही स्नेह और वात्सल्य था जैसा कि अन्य पुत्रों के प्रति। आगे जाकर एक बार तो उसे सात दिनों के लिए मगध देश की राजगद्दी पर भी बिठाया।

बिम्बिसार की और भी राजमहिषियां थीं ही। अतः यह विश्वास किया जा सकता है कि उसके और भी अन्य संतानें रही होंगी। परंतु विपश्यना के पुरातन इतिहास का अनुसंधान करते हुए जो अन्य नाम हमारे सामने आते हैं वे हैं राजकुमार अजातशत्रु, राजकुमार शीलव, राजकुमार चुंद और राजकुमारी चुंदी।

स्पष्ट है बिम्बिसार को अपना परिवार बहुत प्रिय था, राजमहिषियां भी, राजपुत्र भी, राजपुत्रियां भी। पन्द्रह वर्ष की किशोर अवस्था में राज्याभिषेक हो जाने पर, सोलह वर्ष तक मगध साम्राज्य का शासन करते हुए ३१ वर्षीय बिम्बिसार का भगवान गौतम बुद्ध से राजगृह के लट्ठिवन में पहली बार साक्षात्कार हुआ। (वैसे बोधिसत्व परिव्राजक सिद्धार्थ गौतम से छः वर्ष पूर्व पांडव पर्वत पर मिल चुका था।) पहले पहल भगवान गौतम बुद्ध का उपदेश सुनकर बिम्बिसार अन्तर्मुखी हुआ और उसने सत्य दर्शन किया जिससे कि वह श्रोतापन्न बना तो कृतज्ञता विभोर हो उठा। विपश्यना द्वारा अपने भीतर सत्य का थोड़ा सा भी अनुभव होने पर साधक कृतज्ञता विभोर हो जाता है। यह तो श्रोतापन्न अवस्था थी, कृतज्ञता का क्या कहना?

उनकी जीवनधारा ही बदल गयी। काम-कीट की तरह रति-रस में निमग्न रहनेवाला व्यक्ति धर्म-रस चखकर निहाल हो गया। जान गया अपने अनुभव से कि 'धम्म रसं सब्ब रसं जिनाति'। सचमुच सारे रसों से बढ़कर होता है धर्म का रस। ऐसा धर्म रस सब चखें! और उसी समय उसे अपना राजपरिवार स्मरण हो आया। अपनी प्यारी पत्नियों, पुत्रों और पुत्रियों को भी ऐसा धर्म लाभ मिले, इसी कुशलकामना से उसने भगवान के साथ सभी भिक्षुओं को दूसरे दिन सुबह भोजन के लिए आमंत्रित किया। भगवान ने मौन रहकर स्वीकृति दी। दूसरे दिन भिक्षु संघ सहित भगवान भिक्षा के लिए राजमहल पधारे। बिम्बिसार ने अत्यंत सम्मानपूर्वक उन्हें भोजन करवाया। तत्पश्चात भगवान को ऊंचे आसन पर बैठाकर परिवार सहित स्वयं नीचे आसन पर बैठकर भगवान का कल्याणकारी धर्मोपदेश सुना। कानों में शुद्ध धर्म का अमृत रस बहा। वहीं बैठकर भगवान का कल्याणकारी धर्मोपदेश सुना। कानों में शुद्ध धर्म का अमृत रस बहा। वहीं बैठे बैठे उसे अपनी प्रजा का भी ध्यान आया। मेरी सारी प्रजा भी तो मेरी संतान ही है। सब को यह विशुद्ध मुक्ति का मार्ग मिले। यह तभी संभव है जब कि भगवान लंबे समय तक राजगृह में ही विहार करें और भविष्य में भी समय समय पर यहां पधारते रहें।

राजनगरी राजगृह के कल्याण के लिए कोई ऐसा उचित स्थान हो जहां भिक्षु साधक संघ सहित भगवान रह सकें और शुद्ध धर्म के मार्ग पर चलने के लिए नागरिकों का और जनपदवासियों का मार्ग-निर्देशन कर सकें। यह स्थान राजनगरी के कोलाहल से दूर हो क्योंकि ध्यान तो शांत स्थान पर ही किया जा सकता है। परंतु राजनगर से इतना दूर भी न हो कि लोग सुविधापूर्वक जा ही न सकें। यकायक उसे अपना वेणुवन याद आया। यह स्थान इस काम के लिए सर्वथा उपयुक्त था। अत्यंत विनीत भाव से उसने हाथ जोड़कर भगवान से अपने मन की बात कही और वेणुवन के दान की धर्मकामना प्रगट की। भगवान ने मौन रहकर स्वीकृति दी। बिम्बिसार फिर कृतज्ञता-विभोर हुआ। 'सब्ब दानं धम्म दानं जिनाति।' धर्म का दान सभी दानों से श्रेष्ठ है। भगवान ने राजगृह का वेणुवन, साधक संघ के लिए स्वीकार कर लिया। मगध-नरेश धन्य हुआ। – "यहां अनेक लोग शुद्ध धर्म से लाभान्वित होंगे। भव-विमुक्ति के मार्ग पर आरूढ़ हो सकने की विपश्यना-विधि सीख पाएंगे। मेरा परिवार धन्य होगा। मेरी प्रजा धन्य होगी।"

और सचमुच ऐसा ही हुआ। वेणुवन के कलंदप निवास में साधक संघ का पहला विहार बना। मगध का भाग्य जागा। राजपरिवार के और राजनगर तथा मगध राष्ट्र तथा उसके बाहर के भी अनेक लोग शुद्ध धर्म के संपर्क में आये और कल्याण-लाभी हुए।

आज भारत में भी पुनः शुद्ध धर्म जागा है। अनेक लोग इसके सम्पर्क में आएं और कल्याण लाभी बनें।

कल्याणमित्र,
स. ना. गो.